“वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य में बदलते जीवन मूल्य”

अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ में उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा के सौजन्य से महाविद्यालय के हिन्दी विभाग ने द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया. मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध उपन्यासकार एवम् समीक्षक डॉ0 शशि भूषण सिंहल जी एवम् मुख्य वक्ता के रूप में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष वरिष्ठ हिन्दी प्रवक्ता डॉ0 रामसजन पाण्डेय जी थे.

संगोष्ठी के प्रथम एवम द्वितीय सत्र में “वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य में बदलते जीवन मूल्य” विषय को मुख्य आधार मानकर विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए विद्वानो द्वारा विचार रखे गए.

प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग की प्रो0 रामरती आमन्त्रित थी. द्वितीय सत्र में भोपाल विश्वविद्यालय से आमन्त्रित शोध विशेषज्ञ एवम् प्रसिद्ध आलोचक डॉ0 अवधेश कुमार जी मुख्य वक्ता के रूप में थे.

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता अग्रवाल महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री रतन सिंह गुप्ता जी ने की.

संगोष्ठी के प्रथम दिन हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवम् पंजाब प्रदेश के लगभग 30 महाविद्यालयों के प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए.

संगोष्ठी मे विभिन्न विश्वविद्यालयों एवम् शिक्षण संस्थानों से आए हुए दौ सौ से भी अधिक शोधार्थी एवम् प्राध्यापकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया.

कालेज प्राचार्य डॉ0 कृष्ण कान्त गुप्ता जी ने कहा संगोष्ठी व कार्यशालाओ के माध्यम से जहां नित–नूतन ज्ञान का प्रचार–प्रसार होता वही शोधार्थी एवम् विद्यार्थीयों के ज्ञान संवर्धन एवम् नई शोध के लिए काफी लाभप्रद है.

उन्होने कहा भूमण्डलीकरण कें चलते भौतिक संसाधनो ने हमारी जीवन शैली को ही नही हमारी परम्पराओ, मूल्यों, आस्थाओं और चिन्तन शैली को भी प्रभावित किया.

संगोष्ठी के तृतीय सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता साहित्यकार बाबू लाल सिंहल एवम् विशिष्ठ अतिथि के रूप मे ग्रीवेंस कमेटी के सदस्य एवम् राजीव गांधी स्टडी सर्कल के प्रदेश अध्यक्ष अधिवक्ता विकास वर्मा जी थे.

इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ0 रामसजन पाण्डेय ने अपने सम्बोधन में कहा जीवन मूल्य मानव की आचार संहिता है. संविधान की भांति जीवन मूल्य हमारा उचित पथ

प्रस्तुत करता है. साहित्य का मुख्य प्रयोजन धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कराना है. उन्होने इस बात पर भी जोर दिया "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भारतीय अवधारणा को आज वैश्वीकरण ने प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिया है.

प्रो0 शशि भूषण सिंहल जी ने अपने सम्बोधन में कहा वैश्वीकरण के चलते दलित व निम्न वर्ग में शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ उनमें अधिकार बोध भी हुआ है. सिंहल ने विभिन्न उदहारणों व संस्मरणो के माध्यम से जीवन मूल्यों की सुन्दर व्याख्या की.
समारोह के अध्यक्ष लाला रतन सिंह गुप्ता जी ने अपने वक्तव्य में कहा आज जो जीवन मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है उसका मुख्य कारण प्राध्यापक वर्ग में व्यवसायीकरण का भाव होना एवम अध्यापको एवम महाविद्यालयों के द्वारा विद्यार्थीयों में नैतिक शिक्षा के प्रति जागरूक ना करना रहा है.
इस अवसर पर प्रसिद्ध गीतकार डॉ0 राजेश खुशदिल वशिष्ट पत्रकार दैनिकजागरण श्री अनिल बेताब, लोकप्रिय गीतकार नबाब केसर, प्रबन्धक राज भाषा, नई दिल्ली श्री किशोर कुमार कौशल एवम गौरशंकर कपूर जी ने प्रासंगिक विषयों पर कविता सुनाकर समारोह को खुशनुमा बना दिया.
इस अवसर पर संगोष्ठी संयोजक डॉ0 टी0 डी0 दिनकर ने अपने सम्बोधन में कहा सत्यंम्, शिवम्, सुन्दरम इस महा वाक्य में ही सम्पूर्ण मानव जीवन की सुन्दर व्याख्या है.
प्रथम सत्र का संचालन डॉ0 अशोक निराला जी ने किया एवम् तृतीय सत्र में कविगोष्ठी का मंच संचालन डॉ0 बाँके बिहारी ने किया.
इस अवसर पर मुख्य रूप से डॉ0 पी0 डी0 गौतम, डॉ0 शंकर लाल शारस्वत, डॉ0 शुभ तनेजा, डॉ0 किरण आनन्द, डॉ0 हर्ष शारस्वत श्रीमती सीमा भारद्वाज, डॉ0 नरेश कामरा, डॉ0 जयपाल सिंह एवम प्रो0 राम चन्द जी मौजुद थे.

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

"वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य में बदलते जीवन मूल्य"

(निदेशालय उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा के सौजन्य से)

मार्च 5-6, 2012

ESTD. 1971

हिन्दी विभाग, अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़, फरीदाबाद-121004(हरि०)
website:www.aggarwalcollege.org

संपर्कसूत्र/पत्राचार
सह-संयोजिका एसो० प्रो० श्रीमती किरण आनन्द (मो०) 09999242295
श्रीमती सीमा भारद्वाज (मो०) 09312581895

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

"वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य में बदलते जीवन मूल्य"

(निदेशालय उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा के सौजन्य से)

हिन्दी विभाग, अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ द्वारा आयोजित

पंजीकरण-प्रपत्र

नाम (डॉ०/श्रीमान्/श्रीमती) ....

पद : ....

पता : ....

दूरभाष : ....मो० : ....

ई-मेल : ....

पंजीकरण शुल्क : ....श्रेणी : ....

ड्राफ्ट/चैक संख्या : ....तिथि : ....

बैंक का नाम : ....

प्रतिभागी/शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोधपत्र का विषय : ....

तिथि : .... हस्ताक्षर

नोटः- प्रतिभागी/शोधार्थी अपना फार्म व पंजीकरण शुल्क चैक, ड्राफ्ट द्वारा अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ के पक्ष में भेजें।

आयोजन समिति- हिन्दी विभाग

अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़

फरीदाबाद-121004(हरि०)

Ph.No. 0129-2241391,2300769

91-9015521852,9999242295,9013570351

E-mail:conferencehindi2012@gmail.com

ESTD. 1971

- कथा साहित्य में पारिवारिक जीवन मूल्यों का बदलता स्वरूप।
- वैश्वीकरण के दौर में कविसम्मेलनी कविताओं में बदलते जीवन मूल्य।
- भारतीय जीवन दर्शन और मूल्य आधारित अधुनातन चिंतन।
- उत्तर आधुनिक एकांकियों में मूल्य आधारित द्वन्द्व।
- 21वीं सदी के सामाजिक सरोकारों से काव्य में नए मूल्यों का सृजन।
- समकालीन कथा साहित्य में व्यक्ति और समाज की बदलती पहचान।
- प्रवासी भारतीयों के हिन्दी लेखन में नए मूल्यों की स्थापना।
- गैर हिन्दी प्रान्तों के हिन्दी साहित्य में क्षेत्रीय मूल्यों की अवधारणा।
- दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों में मूल्य संक्रमण।
- हिन्दी साहित्य की नव्यतर विधाओं में बदलते जीवन मूल्य।
- वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी पत्रकारिता : मूल्य बोध

महाविद्यालय परिचय :

बल्लबगढ़ हरियाणा प्रान्त के फरीदाबाद जनपद का एक उप–मण्डल है। यह 1857 के स्वाधीनता संग्राम के अमर बलिदानी शहीद राजा नाहर सिंह की कर्म स्थली है। सन् 1971 में स्थापित अग्रवाल महाविद्यालय बहुउद्देशीय शिक्षा का केन्द्र है, जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से सम्बद्ध है। यह राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से 35 कि0मी0 की दूरी पर शेरशाह सूरी राष्ट्रीय राजमार्ग –2 दिल्ली–आगरा रोड पर बल्लबगढ़ शहर के अम्बेडकर चौक के समीप है। यहाँ पहुँचने के लिए नई दिल्ली रेलवे स्टेशन व सराय काले खाँ बस अड्डे से सीधी यातायात सुविधा उपलब्ध है। इस नगर का मौसम मार्च के महीने में दिल्ली के अनुरूप होता है।

आयोजन-समिति :

मुख्य संरक्षक : **श्री रतन सिंह गुप्ता**
अध्यक्ष,अग्रवाल महाविद्यालय प्रबन्ध समिति बल्लबगढ।

संरक्षक : **डॉ० कृष्णकान्त गुप्ता**
प्राचार्य, अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ।

संयोजक : **डॉ० टी०डी० दिनकर,** विभागाध्यक्ष-हिन्दी।

सह-संयोजक : **एसो० प्रो० श्रीमती किरण आनन्द।**

आयोजन-सचिव : **डॉ० अशोक निराला।**

सदस्य गण : **डॉ० रेणु माहेश्वरी,** व्यवस्था प्रमुख।
: **डॉ० बाँके बिहारी,** प्रकाशन प्रमुख।
: **डॉ० हर्ष कुमार,** सम्पर्क प्रमुख।
: **श्रीमती सीमा भारद्वाज,** पत्राचार प्रमुख।

राष्ट्रीय सलाहकार समिति :

डॉ० रमेशचन्द सारस्वत, कुलपति–डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उ0प्र0।
प्रो० लाल चन्द गुप्त मंगल, से0नि0 विभागाध्यक्ष–कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
प्रो० भारत भूषण चौधरी, से0नि0 हिन्दी विभाग–कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
प्रो० रामसजन पाण्डेय, विभागाध्यक्ष–महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।
प्रो० वृषभ प्रसाद जैन, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
प्रो० देवराज आर्य, विभागाध्यक्ष–मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल।
प्रो० सुधा जितेन्द्र, विभागाध्यक्ष–गुरूनानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।
श्री भारतेश मिश्र, प्रधान संपादकः संस्कृति पत्रिका–संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
प्रो० अशोक चक्रधर, से0 नि0 विभागाध्यक्ष–जामिया मिलिया इस्लामिया वि0वि0, दिल्ली।
श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, उ0 सचिव–हिन्दी साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
प्रो० कृष्ण गोपाल कपूर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
प्रो० रमेश कुमार गौतम, डॉ0 हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म0प्र0)

ESTD. 1971

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय :

"वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी साहित्य में बदलते जीवन मूल्य"

(निदेशालय उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा के सौजन्य से)

मार्च 5-6, 2012

कार्यक्रम स्थल : पुस्तकालय भवन छात्रा संभाग, अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़

विषय-बोध :

हिन्दी साहित्य को समय सापेक्ष बदलते हुए जीवन मूल्यों ने सदैव किसी न किसी रूप में दिशा दी है। यद्यपि आधुनिक युग मे अनेक स्तरों पर जीवन मूल्यों में टकराहट होती रही है। फिर भी दलित, शोषित,निर्धन वर्ग तथा नारी समाज के प्रति इन्हीं टकराहटों से नये मूल्यों की स्थापना और नयी सोच विकसित हुई है। हमारी जीवन धारा जिस ओर मुड़ती है साहित्य भी उस ओर मुख कर लेता है। समय के साथ जीवन और साहित्य दोनों की चिन्तन धारा शाश्वत रूप से प्रवाहित होती रही है। वैश्वीकरण के दौर में वैज्ञानिक संसाधनों ने हमारी जीवनशैली को ही नहीं ,मूल्यों और आस्थाओं को भी प्रभावित किया है, 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भारतीय अवधारणा आज भूमंडलीकरण ने सार्थक कर दी है। अत: आज जीवन मूल्यों के विविध पक्षों पर विचार करने की महती आवश्यकता है।

शोधपत्र प्रस्तुति हेतु निर्देश :

- शोधार्थी / प्रतिभागी अपने शोधपत्र संगोष्ठी के विषयों से संबंधित ही भेजें।
- शोध-पत्र दो हजार शब्दों से अधिक न हो।
- शोधपत्र कम्प्यूटर से MS Word द्वारा डबल स्पेस व 12 के फोन्ट में ही टाइप किया हुआ संबंधित ईमेल : conferencehindi2012@gmail.com पर भेजें।
- शोधार्थी / प्रतिभागी का शोधपत्र मौलिक हो एवम् 15 फरवरी 2012 से पूर्व पहुँच जाना चाहिए।

पंजीकरण शुल्क :

पंजीकरण शुल्क के अर्न्तगत संगोष्ठी किट, पुस्तिका, जलपान, सहभोज सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त रहन-सहन की व्यवस्था प्रतिभागी को स्वयम् करनी होगी। इसके संदर्भ में प्रतिभागी आयोजन समिति से संपर्क करें ताकि समुचित सहयोग किया जा सके।

प्रतिभागी प्राध्यापक/शैक्षणिक संस्था सदस्य शुल्क	₹ 500/-
शोधार्थी/विद्यार्थी शुल्क	₹ 300/-

मुख्य तिथियाँ एवम् संगोष्ठी स्थल :

शोधपत्र प्राप्ति अंतिम तिथि	15 फरवरी, 2012
राष्ट्रीय संगोष्ठी	05-06 मार्च, 2012
स्थल : अग्रवाल महाविद्यालय छात्रा संभाग 'पुस्तकालय भवन'	

संभावित विषय:-

- नयी कविता में बदलते जीवन मूल्य।
- स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक मूल्यों का विघटन।
- नयी कहानी में अभिव्यक्त मूल्यों में अन्तर्विरोध ।
- वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी नाटकों में समय सापेक्ष जीवन मूल्य।